مبارک رضا

अज़ाने ख़ुतबा

और

इक़ामत

मुसन्निफ़

पीरे तरीक़त शेरे नेपाल हज़रत अल्लामा

मुफ़्ती जैश मोहम्मद सिद्दीक़ी

जनकपुर नेपाल

तमाम भाईयो को सलाम किताबे
स्केन करके पीडिएफ में आप
तक पहुँचाने के लिए इस
फक़ीर को अपनी दुआओ मे
खास तौर पर याद रखे।

दुआओ का तालीब
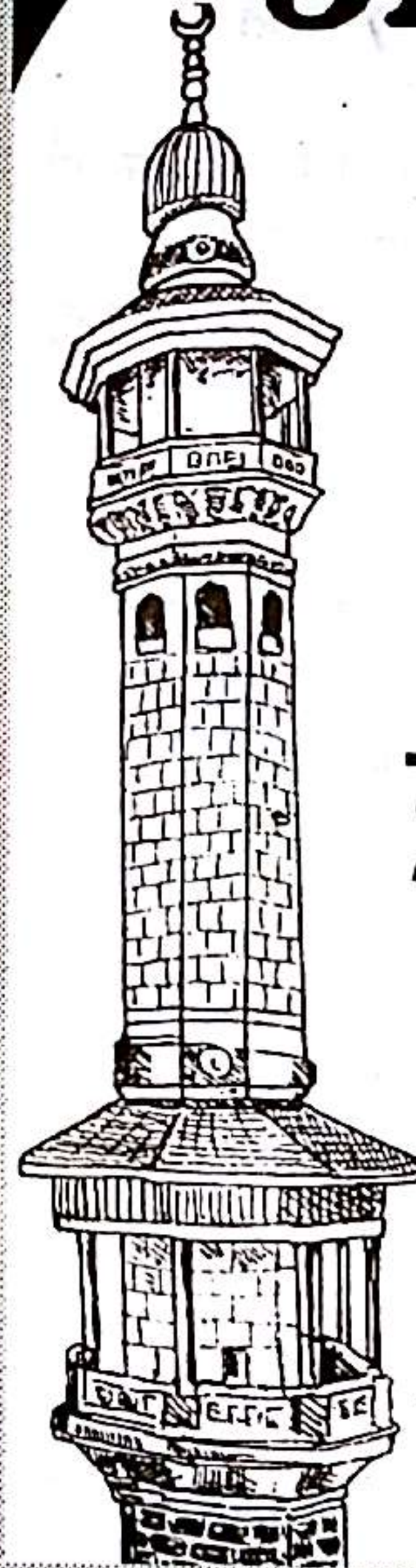
सग ए रज़ा लाला ख़ान

मुबारक रजा सनावद

अज़ाने ख़ुतबा और इक़ामत

मुसन्निफ़
पीरे तरीक़त शेरे नेपाल हज़रत अल्लामा

मुफ़्ती जैश मोहम्मद सिद्दीक़ी

जनकपुर नेपाल

नाम किताब : अज़ाने ख़ुतबा और इक़ामत

नाम मुसन्निफ़ : पीरे तरीक़त शेरे नेपाल हज़रत अल्लामा मुफ़्ती जैश मोहम्मद सिद्दीक़ी शैख़ुल हदीस जामेआ हन्फ़िया ग़ौसिया, जनकपुर (नेपाल)

ब एहतिमाम : अबुल इत्र मोहम्मद अब्दुस्सलाम अमजदी बरकाती, तारापट्टी (नेपाल)

प्रुफ़ रीडर : मौलाना ज़ियाउल मुस्तफ़ा साहब (मुतअल्लिम जामेआ ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, खजराना, इन्दौर)

नाशिर : कंज़ुल ईमान फ़ाउन्डेशन (तारा पट्टी, नेपाल)

सने इशाअत : 1433 हि. मुताबिक़ 2011 ईसवी

क़ीमत : 10/- (दस रूपया)

पेशे लफ़्ज़

अज़ क़लम : फ़सीहुल्लिसान हज़रत अल्लामा
मुहम्मद अलाउद्दीन बरकाती मिस्बाही
उस्ताज़ मदरसा गुलशने रज़ा तिरहुट, दमोली (नेपाल)

بسم الله الرحمن الرحيم

फ़क़ीहे इस्लाम मुफ़स्सिरे क़ुरआने अज़ीम मुवज़्ज़ेहे अहादीसे रसूले करीम, इल्मो हिकम के जबले शामिख़, सबरो तहम्मुल के कोहे हिमाला फ़रीदे ज़माना, वहीदे यगाना, उस्ताज़ुल उलमा हज़रत अल्लामा अश्शाह मुफ़्ती जैश मुहम्मद सिद्दीक़ी साहेब क़िब्ला की वो तन्हा ज़ात है जिसने मुल्क नेपाल में मस्लके हक़, मस्लके आला हज़रत की तरवीजो इशाअत में सबसे अहम रोल अदा किया। मस्लके आला हज़रत की हक़्क़ानियत व ताईद में ज़बानो बयान और तहरीरो क़लम के ज़रीए दलाइल के अम्बार लगाकर बद मज़हबों के शर व निफ़ाक़ और उनके असली चेहरे को बे निक़ाब किया और मुसलमानाने वतन को इन बद बातिन व बद्दहन की ग़िलाज़त व निजासत और बे दीनी व गुमराही और उनकी टोपी व जुब्बा में छुपी हुई रसूल दुश्मनी से आगाह किया यह अल्लाह तआला का फ़ज़्लो करम और उसके महबूब नबिये मोहतशम अलैहिस्सलातो वस्सलाम की इनायात व नवाज़िशात हैं और शैख़ ममदूह की मेहनत व काविश का समरा (नतीजा) है

कि कुफ़्रिस्तान में परचमे इस्लाम लहरा रहा है।

आप बरसों से नेपाल व हिन्दूस्तान के मुतअद्दिद मक़ामात से आए हुए सवालों के जवाब देते आ रहे हैं, हज़ारों की तादाद में फ़तावा कई दफ़ातिर में मरक़ूम हैं जिनमें से चन्द फ़तावा किताबी शक्ल में बनाम "फ़तावा बरकत,, अव्वल व दौम मन्ज़रे आम पर आ चुके हैं जो अवाम व ख़वास के मुतालआ में हैं, अब तक इन दोनों हिस्सों के तबाअत नो हज़ार एक सो तक हो चुकी है और बाक़ी फ़तावा पर काम चल रहा है।

आप का एक फ़तवा "जुमा की अज़ाने सानी,,की तहक़ीक़ में इजमाल व तफ़सील के माबैन जब कि दूसरा फ़तवा "इक़ामत से मुतअल्लिक़ मुदल्लल व मुफ़स्सल है। मुअख़्ख़रुल ज़िक्र मुस्तक़िल एक रिसाला बनाम "तनवीरुल अबसार लि इक़ामतिल अख़यार,,है जो फ़तावा बरकात अव्वल में छप चुका है, जब कि पहला फ़तवा भी मतबूअ् है मगर इस फ़तवे के बाज़ अरबी इबारत तर्जमे से ख़ाली है। चुनांचे दोनों फ़तवों को एक रिसाले की शक्ल में जमा कर के अरबी इबारात के तर्जमे के साथ इफ़ादा–ए–आम्मह के पेशे नज़र ब ज़बाने "उर्दू व हिन्दी,, हज़रत मौलाना **मोहम्मद अब्दुस्सलाम अमजदी बरकाती** के ज़ेरे एहतिमाम **कन्ज़ुल ईमान फ़ाउन्डेशन** नारा पट्टी/8 (नेपाल) की तरफ़ से शाए किया जा रहा है क्यों कि इस तन्ज़ीम के क़याम का मक़सद ही उलमा व मशाइख़ की किताबों की इशाअत करके अवामे

अहले सुन्नत को हक़ाइक़ से आगाह करना है। यह तन्ज़ीम का इब्तिदाई दौर है और इन्शाअल्लाहुर्रहमान यह सिलसिला–ए–इशाअत जारी रहेगा।

हमें बेहद ख़ुशी हो रही है मोहसिने मिल्लत हुज़ूर शेरे नेपाल क़िब्ला के इस रिसाले को शाए करके और उम्मीद की क़ारेईन हमारी इस हक़ीर कोशिश को सराह कर हमारा हौसला बढ़ाऐंगे और तन्ज़ीम के मुजव्वजा मन्सूबों की तकमील में हमारा तआवुन करके क़ौम व मिल्लत और ख़िदमते दीने मतीन का फ़रीज़ा अन्जाम देंगे। दुआ है कि मौला तआला हमारी ज़िन्दगी के हर लम्हा को अपने महबूब अलैहिस्सलाम के लाए हुए दीन की इशाअत व तब्लीग़ में मसरूफ़ रखे।

आमीन बिजाहे सय्येदुल मुरसलीन सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम 0

काम वह ले लीजिये तुम को जो राज़ी करे
ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोड़ों दुरूद

ख़ादिमे क़ोमो मिल्लत
मैकश रज़ा मुहम्मल अलाउद्दीन बरकाती मिस्बाही
उफ़िय अन्ह।

सुवालात

जुमा की दूसरी अज़ान कहाँ हो ?

सुवाल 1 : क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन कि ख़ुत्बा की अज़ाने सानी (दूसरी) कहा होनी चाहिये ? कुरआनो हदीस की रोशनी में जवाब मरहमत फ़रमाएं और नमाज़े पंजगाना के लिये मीनारा वाली अज़ान कहां पर होनी चाहिये ? मुदल्लल व मुफ़स्सल तहरीर फ़रमाएं।

दुआगो : रईस अहमद अहले सुन्नत, ज़िला नेनीताल (यू.पी.)

इक़ामत के वक़्त बैठकर तकबीर सुनें या खड़े होकर ?

सुवाल 2 : क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़्तियाने शरअ् मतीन कि ब वक़्ते इक़ामत इमाम व मुक़्तदी बैठकर तकबीर सुनें या खड़े होकर ? बाज़ लोग कहते हैं बैठ कर सुनना नया मस्अला है, बरैलवी का गढ़ा हुआ है, फ़लां फ़लां मक़ाम पर ब वक़्ते इक़ामत लोग खडे रहते हैं सिर्फ़ बरैली वाले ही उस वक़्त बैठे रहते हैं। अब दरयाफ़्त यह है कि उस वक़्त क्या करे और किस वक़्त खड़े हों ? हदीसो फ़िक़ह की रोशनी में साफ़ साफ़ मुफ़स्सल व मुदल्लल ब हवाला–ए–कुतुबे मोअ्तबरह जवाब अता फ़रमाएं।

मुस्तफ़्ती : (मौलाना) अमीरुद्दीन रज़वी

सदरुल मुदर्रेसीन जामिआ रज़विया पटना सिटी

सय्यद वलीउद्दीन

नाज़िमे आला जामिआ रज़विया पटना सिटी (बिहार)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ مَنَحَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ اَلۡفَوۡزَ وَالۡفَلَاحَ ٥ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى اَشۡرَفِ الۡاَبۡدَانِ وَاَكۡرَمِ الۡاَرۡوَاحِ ٥ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحۡبِهٖ وَاَئِمَّةِ دِيۡنِهٖ الَّذِيۡنَ اَمَرُوۡا خَارِجَ الۡمَسۡجِدِ بِالصِّيَاحِ وَالۡاِقَامَةِ حِيۡنَ يُقَالُ حَىَّ عَلَى الۡفَلَاحِ ٥

जवाब नं. 1: ख़ुत्बा की अज़ान ख़तीब के सामने बैरूने मस्जिद (मस्जिदे के बाहर) दरवाज़े पर होनी चाहिये। (1) तफ़सीरे रूहुल बयान जिल्द 9, पारा 18 में शैख़ इस्माईल हक़्क़ी कुद्दसा सिर्रुहुल आली मुतवफ़्फ़ी सन् 1137 हि. फ़रमाते हैं : हुज़ूर पुर नूर शफ़ीओ यौमुन्नुशूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के लिये एक मुअज़्ज़िन था तो जब हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा होते तो मुअज़्ज़िन मस्जिद के दरवाज़े पर अज़ान कहता। फिर जब मिम्बर से नुज़ूल फ़रमाते तो मुअज़्ज़िन इक़ामत कहता। फिर अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो और अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो अन्हो अपने अपने दौरे ख़िलाफ़त तक यूँ ही अमल पैरा रहे, लेकिन जब अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का दौर आया और मुसलमानों की कसरत हुई, मकानात, महल्लात दूर दूर तक फेल गए तो अव्वल (पहली) अज़ान का इज़ाफ़ा फ़रमाया और अपने महल सराए के पास मक़ाम ज़ौरा पर अज़ान

कहने का हुक्म सादिर फ़रमाया ताकि लोग सुनें। फिर जब मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा होते तो दूसरा मुअज़्ज़िन अज़ान पुकारता फिर जब मिम्बर से उतरते तो नमाज़ के लिये इक़ामत कहता तो उस इज़ाफ़े पर किसी ने भी ऐतिराज न किया।

(2) हज़रत अल्लामा अलाउद्दीन अली बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम बग़दादी ख़ाज़िन ने अपनी तफ़सीरे ख़ाज़िन जि. 4, स. 265 और पारा 28, सूरए जुमुआ में إِذَا نُودِيَ لِلصَّلٰوةِ (जब नमाज़ के लिये आवाज़ दी जाए) के तहत फ़रमाते हैं इस आयते करीमा में निदा से मुराद वह अज़ान है जो मिम्बर पर ख़तीब के बैठते वक्त पुकारी जाती है क्यों कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के ज़माने में इस अज़ान के सिवा कोई दूसरी अज़ान न थी। यह अज़ान हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के मिम्बर पर तशरीफ़ रखने पर होती थी।

साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि अज़ाने अव्वल (पहलो अज़ान) जुमा के दिन सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो अन्हुमा के दौर में इमाम के मिम्बर पर बैठने के वक्त हुआ करती थी फिर जब उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहो अन्हो ख़लीफ़ा हुए और कसरत मुसलमान की हा गई तो दूसरी अज़ान का इज़ाफ़ा मक़ामे ज़ौरा में कर दिया।

और एक रिवायत में इतना और है कि अम्र अब इसी पर जारी हो गया और अबू दाऊद में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि

वसल्लम के सामने मस्जिद के दरवाज़े पर जब हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा होते अज़ान कही जाती थी और बाक़ी उसी की तरह है। ज़ौरा एक जगह का नाम है जो मस्जिद के क़रीब मदीने के बाज़ार के पास है और कहा गया है कि वह एक मिनारा की तरह बलन्द मक़ाम का नाम है।

(3) और तफ़सीरे सावी जि. 4, स. 174 में हज़रत शैख़ अल्लामा आरिफ़ बिल्लाह अहमद सावी मालिकी रज़ियल्लाहो अन्हो मज़कूरा आयते करीमा إِذَا نُودِيَ لِلصَّلٰوةِ مِن يَّوْمِ الْجُمُعَةِ के तहत फ़रमाते हैं : इससे मुराद वह अज़ान है जो ख़तीब के मिम्बर पर बैठने के वक्त दी जाती है क्यों कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के ज़माने में इसके सिवा और कोई अज़ान नहीं थी। चुनांचे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक मुअज़्ज़िन था जब मिम्बर पर तशरीफ़ रखते तो मुअज़्ज़िन मस्जिद के दरवाज़े पर अज़ान देता और जब आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ख़ुत्बे से फ़ारिग़ हो कर नीचे तशरीफ़ रखते तो नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाती। इसी तरह हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा और कूफ़ा में हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का अमल था, यहाँ तक कि जब हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहो अन्हो ख़लीफ़ा हुए तो लोगों की कसरत और घरों के मस्जिद से दूर होने की वजह से आपने एक दूसरी अज़ान का इज़ाफ़ा फ़रमाया तो पहली अज़ान मक़ामे ज़ौरा पर दी जाने लगी जिसे लोग सुनकर मस्जिद का रुख़ करते यहाँ तक कि जब आप

मिम्बर पर बैठ जाते तो मुअज़्ज़िन दूसरी अज़ान कहता और उस वक़्त (सहाबा में से) किसी ने मुख़ालफ़त नहीं की क्यों कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम का फ़रमान है **मेरे बाद मेरी और ख़ुलफ़ाए राशेदीन की सुन्नत को लाज़िम पकड़ो** (और हज़रत उस्माने ग़नी ख़ुलफ़ाए राशेदीन में तीसरे ख़लीफ़ा हैं) (अमजदी)

(4) और सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि नबिये करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बक्र व उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के ज़माने में जुमा के दिन अज़ान उस वक़्त दी जाती जब इमाम मिम्बर पर बैठ जाते फिर जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए और लोग ज़्यादा हो गए तो आपने तीसरी अज़ान का मक़ामे ज़ौरा पर इज़ाफ़ा फ़रमाया और अबू अब्दुल्लाह ने कहा कि **ज़ौरा** बाज़ारे मदीना में एक जगह का नाम है।

मतलब : ऊपर बयान कर्दा अहादीस और फ़ुक़हा के अक़वाल का खुलासा यह है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ व उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के ज़माने तक एक ही अज़ान होती थी जो उस वक़्त पुकारी जाती थी जब ख़तीब मिम्बर पर बैठ जाता और वह भी मस्जिद के बाहर दरवाज़े पर, क्यों कि हदीस में कोई ऐसा लफ़्ज़ मज़कूर नहीं जो इस बात पर दलालत करता हो कि अज़ान मस्जिद में होती थी।

अब तरतीबे अज़ान इस तरह राइज है।

(क) पहली अज़ान जिसका इज़ाफ़ा हज़रत उस्मान ने फ़रमाया जो अज़ान सानी और अज़ान सालिस से भी ताबीर की गई है, क्योंकि इक़ामत पर अज़ान का इतलाक़ होता है जिसका बयान आगे इन्शाअल्लाह आएगा (अमजदी)

(ख) दूसरी अज़ान जो ख़तीब के मिम्बर पर बैठने के वक़्त उसके मुक़ाबिल मस्जिद से बाहर दरवाज़ा–ए–मस्जिद पर दी जाती है यह अज़ान सरकार के ज़माने में पहली अज़ान थी।

(ग) इक़ामत क्योंकि इक़ामत भी अज़ान ही की तरह है इस लिये उसे अज़ान से ताबीर कर सकते हैं। (अमजदी)

(5) हज़रत साइब बिन यज़ीद से मरवी हदीस को साहिबे मिश्कात हज़रत अल्लामा मौलाना शैख़ वलीयुद्दीन मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह ख़तीब तबरेज़ी ने भी मिश्कात शरीफ़ के स. 123 में नक़्ल फ़रमाया है।

(6) और यही हदीस अबू दाऊद शरीफ़ जि.1 स.171, में यूँ मरवी है कि **जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सैय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा जुमा के दिन मिम्बर पर तशरीफ़ रखते तो आमने सामने मस्जिद से बाहर दरवाज़े पर अज़ान पुकारी जाती थी।**

(7) फ़तहुल क़दीर जि.1 स.215 पर अल्लामा शैख़ कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद मारूफ़ ब इब्ने हुमाम फ़रमाते हैं कि **अज़ान** अज़ान ख़ाना (मीनारा) पर हो और अगर अज़ान ख़ाना न हो तो मस्जिद के बाहर हो, और फ़ुक़हाए किराम

ने फ़रमाया है किं मस्जिद के अन्दर न कही जाए।

(8) और मलेकुल उलमा हज़रत अल्लामा शैख़ अलाउद्दीन अब् बक्र बिन मस्ऊद कासानी हन्फ़ी, (वफ़ात सन् 587 हि.) फ़रमाते हैं **और बेहतर यह है कि अज़ान ऐसी जगह दी जाए जहाँ से अज़ान लोगों को ख़ूब सुनाई दे जैसे अज़ान ख़ाना (मीनारा) वग़ैरह** (बदाए उस्सनाए, जि., स.149) और इसी के सफ़ा 152 पर है **और सही आम (जमहूर) उलमा का क़ौल है.......**

(9) और रद्दुल मोहतार स. 283 पर हज़रत अल्लामा शैख़ फ़क़ीहे अस्र वहीदे दहर मुहम्मद अमीन शहीर ब इब्ने आबेदीन फ़रमाते हैं कि कुनया में है कि अज़ान बलन्द जगह पर और इक़ामत ज़मीन पर कहना सुन्नत है और मग़रीब की अज़ान के बाद मशाइख़ का इख़्तिलाफ़ है और ज़ाहिर यही कि मग़रीब में भी बलन्द कहना सुन्नत है जैसा कि इसका बयान अन क़रीब आएगा और सिराज (एक किताब का नाम) में है कि **मुअज़्ज़िन के लिये मुनासिब यह है कि अज़ान ऐसी जगह दे कि लोग ख़ूब अच्छी तरह सुने और (अज़ान में) अवाज़ बलन्द करे और अपने ऊपर ज़्यादा ज़ोर न लगाए कि यह नुक़सान देह है।**

और इसी (किताब) में है कि **हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना–ए–अक़्दस में अज़ान ख़ाना न था और शैख़ इस्माईल की शरह में इमामे सुयूती अलैहिर्रहमा के अवाइल से मनक़ूल है कि अव्वल (पहले) जो शख़्स मिस्र के मिनारा पर अज़ान के लिये चढ़ा वह शरजील इब्ने आमीर मुरादी हैं और सलमा ने हज़रत मुआविया के हुक्म से अज़ान ख़ाने**

बनाए और इससे पहले अज़ान ख़ाना न था और इब्ने सअद ने सनद के साथ उम्मे ज़ैद बिन साबित तक बयान करते हुए बताया कि हज़रत ज़ैद की माँ फ़रमाती हैं कि मस्जिद के आस पास के घरों में मेरा घर सबसे बलन्द था। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो शुरू में अज़ान के वक्त उसी के ऊपर अज़ान कहते थे, यहाँ तक कि सरकार अबदे क़रार अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने अपनी मस्जिद बनवाई फिर उसी मस्जिद के ऊपर अज़ान होने लगी और इसके लिये उसके ऊपर कोई चीज़ बलन्द करदी गई थी।

(10) और हिदाया के हाशिया स. 72 पर है कि इब्ने उमर अबू हुरैरह से रिवायत करते हैं कि मिनारे पर अज़ान सुन्नत है और इक़ामत मस्जिद के अन्दर।

(11) और शरह वक़ाया के हाशिया स. 202 पर है कि इब्ने हाज मालिकी की किताब मुदख़ल में है कि जुमा की अज़ान सुन्नत जब इमाम मिम्बर पर जाए यह है कि मुअज़्ज़िन मिनारे पर हो और ऐसा ही था नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अबू बक्र व उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा के ज़माने में, फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहो अन्हो ने मक़ामे ज़ौरा पर एक दूसरी अज़ान का इज़ाफ़ा फ़रमाया (जो अब पहली अज़ान मानी जाती है, (अमजदी) और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में मीनारे पर ख़तीब के मिम्बर पर होते वक्त होने वाली अज़ान को बरक़रार (जो अब अज़ाने सानी कहलाती है, (अमजदी)

(12) और हाशिया मुअत्ता इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहे अलैहि सफ़ा 138 पर मज़कूर है और तबरानी के नज़दीक हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहो अन्हो हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम और अबू बक्र व उमर रज़ियल्लाहो अन्हुमा के अहदे मुबारक में मस्जिद के दरवाज़े पर अज़ान पुकारते थे, फिर जब उस्मान रज़ियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त का ज़माना आया और लोग ज़्यादा हो गए तो तीसरी अज़ान बढ़ा दी और सही इब्ने ख़ुज़ेमा में है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने पहली अज़ान का हुक्म फ़रमाया और एक ही अज़ान को तीसरी और पहली कहने में कोई हरज नहीं क्योंकि उस (अज़ान) को अज़ान व इक़ामत पर ज़्यादा होने के एतिबार से तीसरी अज़ान कहा जाता है और पहले होने के लिहाज़ से पहली कहा जाता है ।

(13) अबू दाऊद शरीफ़, जि. 1 स.93 पर कि हज़रत अरवाह बिन्त ज़ुबैर से मरवी है कि बनी नज्ज़ार की एक औरत ने बताया कि मस्जिद के इर्द गिर्द घरों में मेरा घर सबसे ऊँचा था तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो उसी पर फ़ज्र की अज़ान देते थे।

(14) और आलमगीरी जि.1 स.29 पर है कि अज़ान ख़ाना पर अज़ान कहना मुनासिब है या मस्जिद के बाहर लेकिन मस्जिद में अज़ान न कहे। फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ में यूँ मज़कूर है और सुन्नत किसी बलन्द जगह पर अज़ान कहना है जहाँ से उसके पड़ोसी ब ख़ूबी सुन सकें और मुअज़्ज़िन अपने आवाज़ बलन्द करे और अपने नफ़्स पर मशक़्क़त न डाले (ताक़त से ज़्यादा आवाज़

बलन्द करके) बहरुर्रराइक में ऐसे ही लिखा है।

निचोड़ : ऊपर बयान करदा तफ़ासीर व अहादीस और अक़वाले अइम्मा की रौशनी में ख़ूब ख़ूब वाज़ेह और ज़ाहिर हो गया कि ख़ुतबा की अज़ान मस्जिद से बाहर दरवाज़े पर और पाँचों वक़्त की अज़ान मीनारे पर हो। मीनारा न हो तो मस्जिद से बाहर किसी बलन्द जगह पर हो। इसके लिये जहत मुतअय्यन नहीं । हाँ, जिस तरफ़ मुसलमानों की आबादी ज़्यादा हो उस तरफ़ से अज़ान देना मुनासिब है कि फ़ोक़हा की नज़र में यही ज़्यादा मुनासिब है। वल्लाहो अअ्लम बिस्सवाब

मसाइले इक़ामत

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम, अम्मा बअ़द !

अलजवाब बि औनिल मलिकिल वह्हाब व मिन्हु हिदायतुल हक़्क़ि वस्सवाब

इमाम व मुक़्तदी दोनों ब वक़्ते इक़ामत बैठे बैठे तकबीर सुनें। अगर कोई शख़्स ऐसे वक़्त में मस्जिद में आए कि तकबीर हो रही हो तो फ़ौरन बैठ जाए और सब के सब हय्या अलल फ़लाह पर खड़े हों। खड़े खड़े इक़ामत का इन्तिज़ार करना और तकबीर सुनना मकरूह है।

दलाइल व बराहीन मुलाहज़ा हों।

(1) उलमाए किबार व फ़ुक़हा–ए–नामदार व उलमाए ज़ीवक़ार कि एक अज़ीम मोहतम बिशशान जमाअत की तरतीब दादह और तालीफ़ करदा किताबे मुस्तताब **फ़तावा हिन्दिया** मअरूफ़ बा

फ़तावा आलमगीरिया के सफ़ा 29 जि. 1 पर व मज़कूर है जब कोई शख़्स इक़ामत के वक़्त (मस्जिद) आए तो उसे खड़े होकर इन्तिज़ार करना मकरूह है, बल्कि बैठ जाए, फिर मोअज़्ज़िन हय्या अलल फ़लाह कहे तो खड़ा हो। यही **मुज़मरात** में है अगर मोअज़्ज़िन इमाम के सिवा कोई और हो और नमाज़ी मअ् इमाम के मस्जिद के अन्दर हों तो मुअज़्ज़िन जिस वक़्त इक़ामत में हय्या अलल फ़लाह कहे उसी वक़्त हमारे तीनों उलमा (इमामे आज़म, इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद अलैहिमुर्रहमह) के नज़दीक इमाम और सारे नमाज़ी खड़े हों यही सही है।

और इमाम मस्जिद से बाहर हो तो अगर सफ़ों के जानिब से मस्जिद में दाख़िल हों तो जिस सफ से वह गुज़रे तो वह सफ़ खड़ी हो जाए और इसी तरफ़ शमसुल अइम्मा हलवाई और सरख़सी और शैख़ुल इस्लाम ख़्वाहर ज़ादा का रुजहान है।

और अगर इमाम मस्जिद में नमाज़ियों के सामने से आए तो इमाम को देखते ही सबके सब खड़े हो जाएं और अगर मुअज़्ज़िन और इमाम एक हो अगर वह इक़ामत मस्जिद के अन्दर कहे तो जब तक इक़ामत से फ़ारिग़ न हो जाए तब तक नमाज़ी खड़े न हों

और अगर वह मस्जिद से बाहर इक़ामत कहे तो हमारे मशाइख़ का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जब तक इमाम मस्जिद में दाख़िल न हों, नमाज़ी खड़े न हों।

(2) हज़रत अल्लामा शैख़ अलाउद्दीन मुहम्मद बिन अली हस्कफ़ी मुतवफ़्फ़ा 10 शव्वाल सन् 1088 हि. और अल्लामा सय्यद मुहम्मद अमीन शहीर ब इब्ने आबेदीन मुतवफ़्फ़ा सन्

1253 हि. दोनों हज़रात अपनी अपनी किताब दुर्रुल मुख़्तार और रद्दुल मुख़्तार के जि. 1, स. 295 पर इरशाद फ़रमाते हैं : कोई शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुआ उस वक़्त कि मुअज़्ज़िन इक़ामत कह रहा हो तो बैठ जाए और बैठा रहे इमाम के अपने मुसल्ला पर खड़े होने तक और उसके लिये खड़े हो कर इन्तिज़ार करना मकरूह है बल्कि बैठ जाए, जब वह मुअज़्ज़िन हय्या अलल फ़लाह पर पहुँचे तो खड़ा हो।

(3) फिर अल्लामा शैख़ अलाउद्दीन हनफ़ी हस्कफ़ी **दुर्रे मुख़्तार** के सफ़ा 354 जि. 1 पर रक़्म तराज़ (लिखते) हैं **इमाम व मुक़्तदी दोनों को खड़ा होना चाहिये जिस वक़्त हय्या अलल फ़लाह कहा जाए।** ज़ुफ़र रहमतुल्लाहे अलैहि का इसमें ख़िलाफ़ (इख़्तिलाफ़) है उनके नज़दीक हय्या अलस्सलाह पर खड़ा होना चाहिये।

(4) और इसी (मज़कूरा इबारत) के तहत अल्लामा शामी मुहम्मद अमीन मअ़रूफ़ ब इब्ने आबेदीन वहीदे दहर फ़रीदे अस्र रद्दुल मोहतार में तहरीर फ़रमाते हैं : यानी कन्ज़ और नूरुल ईज़ाह और इस्लाह और ज़ोहरिया और बदाए और इसके अलावा दूसरी किताबो में है कि हय्या अलल फ़लाह पर खड़ा होना चाहिये और दुरर में मतनन व शरह हय्या अलस्सलाह पर खड़ा होना मज़कूर है और शैख़ इस्माईल ने इसको ओयूनुल मज़ाहिब और फ़ैज़ और वक़ाया और निक़ाया और हावी और मुख़्तार की तरफ़ मन्सूब किया है और अल्लामा शामी फ़रमाते हैं कि मुलतक़ी के मतन में इसी पर एतिमाद किया है। अव्वल (पहले) कि हिकायते क़ील (कहा गया है) से की है लेकिन इब्ने कमाल ने अव्वल

यानी हय्या अलल फ़लाह पर खड़े होने की तस्हीह फ़रमाई है और अपनी इबारत की तसरीह की कि ज़ख़ीरा में कहा है कि जब मोअज़्ज़िन हय्या अलल फ़लाह कहे तो इमाम और क़ौम (मुक़तदी) खड़े हों। यह हमारे तीनो इमामे आज़म और इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद के नज़दीक है और हसन बिन ज़ियाद और इमाम ज़ुफ़र ने कहा है कि जब मुअज़्ज़िन क़दक़ा मतिस्सलाह पहली मरतबा कहे तो सब खड़े हो जाए और जब दूसरी मरतबा कहे तो तकबीरे तहरीमा (अल्लाहु अकबर) कहें लेकिन हमारे तीनो इमाम (इमाम आज़म, इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद अलैहिरमुर्रहमा) का क़ौल सही है यानी हय्या अलल फ़लाह पर खड़ा होना।

(5) आलिमे नबील शैख़ हसन इब्ने अम्मार इब्ने अली शुरंम बुलाली हनफ़ी मुतवफ़्फा सन् 1069 हि. की नूरुल ईज़ाह मअ मराक़िल फ़लाह में है : आदाबे नमाज़ से है कि अगर इमाम हाज़िर हों मेहराब के पास (मुसल्ला पर) तो जब मुक़ीम (इक़ामत कहने वाला) हय्या अलल फ़लाह कहे उस वक्त इमाम और मुक़्तदी दोनों को खड़ा होना चाहिये इस लिये कि मुक़ीम ने अपने क़ौल में खड़े होने का हुक्म दिया है लिहाज़ा इसका जवाब खड़े होकर देना चाहिये और अगर इमाम हाज़िर न हो तो इमाम के पहुँचने पर खड़ा होना चाहिये।

(6) और हाशिया अला मराक़िल फ़लाह सफ़ा 225 पर (हर सफ़ खड़ी हो जाए) के तहत हज़रत अल्लामा सय्यद अहमद बिन मुहम्मद इस्माईल तहतावी हनफ़ी मुतवफ़्फ़ा सन् 1231

हि. फ़रमाते हैं बाज़ फ़ुक़हा की इबारत में है जिस सफ़ से इमाम गुज़रे वह सफ़ खड़ी हो जाए और अगर इमाम उनके सामने से मस्जिद में दाख़िल हो तो सब के सब खड़े हो जाएं जिस वक्त उनको देखें, और जब मुअज़्ज़िन इक़ामत शुरू करे और मस्जि में कोई दाख़िल हो तो बैठ जाए और ख़ड़े हो कर इन्तिज़ार न करे क्यों कि यह मकरूह है। (कमा फ़िल मुज़मरात क़हस्तानी) और इससे इब्तिदाए इक़ामत में क़याम (खड़े होने) की कराहत समझी जाती है और लोग इससे ग़ाफ़िल हैं।

(7) और हज़रत मलेकुल उलमा अबू बक्र इब्ने मस्ऊद कासानी हनफ़ी मुतवफ़्फ़ा सन् 587 हि. अपनी किताब बेमुस्तताब मोअ़तबर व मुस्तनद बदाए उस्सनाए जि. 1, स. 200 पर ज़िक्र फ़रमाते हैं इसका हासिल यह है कि अगर इमाम नमाज़ियों के साथ मस्जिद में हो तो लोगों का सफ़ में खड़ा होना उस वक्त मुस्तहब है जिस वक्त मोअज़्ज़िन हय्या अलल फ़लाह कहे और ज़ुफ़र और हसन बिन ज़ियाद के नज़दीक (उस वक्त) खड़े हों जिस वक्त मोअज़्ज़िन पहली मरतबा क़दक़ामतिस्सलाह कहे और तकबीर (तहरीमा) कहें जब दुबारा क़दक़ामतिस्सलाह कहे। इस लिये कि उसका (मोअज़्ज़िन) क़ौल क़दक़ामतिस्सलाह क़याम की ख़बर देता है न कि उसका क़ौल हय्या अलल फ़लाह और हमारी दलील यह है कि उनक21 क़ौल हय्या अलल फ़लाह होता है ऐसी चीज़ की तरफ़ जिस चीज़ में उन सब की फ़लाह (कामयाबी) है और उसकी तरफ़ जल्दी करने का अम्र (हुक्म) है तो ज़रूरी हुआ उसका जवाब देना और जवाब देना बिला क़यामे

इलस्सलात (बग़ैर नमाज़ के लिये ख़ड़ा हुए) हासिल न होगा तो मुनासिब था कि लोग उसके क़ौल हय्या अलस्सलाह पर खड़े हों उस दलील से जो हमने ज़िक्र किया लेकिन हम उनको भी खड़े होने से रोकते हैं ताकि उसका क़ौल हय्या अलल फ़लाह लग़व (बेकार) क़रार न पाए। इस लिये कि जिस शख़्स से किसी चीज़ का कर लेना पा लिया गया हो फिर उस शख़्स को उसी चीज़ के हासिल करने की तरफ़ बुलाना एक बेकार सी बात होगी

इमाम ज़ुफ़र का क़ौल कि क़दक़ा मतिस्सलाह क़याम की ख़बर देता है तो हम उसके जवाब में कहेंगे कि क़दक़ामतिस्सलाह क़यामे सलात की ख़बर देता है न कि क़यामे इलस्सलात (नमाज़ के लिये खड़े होने) की।

(8) और हज़रत अल्लामा अबुल बरकात अब्दुल्लाह इब्ने अहमद नस्फ़ी मुतवफ़्फ़ा सन् 710 हि. अपनी किताब कन्ज़ुद्दक़ाइक़ के सफ़ा 36 पर इरशाद फ़रमाते हैं : खड़ा होना उस वक़्त है जब हय्या अलल फ़लाह कहा जाए।

(9) सदरुश्शरीआ हज़रत उबैदुल्लाह इब्ने मस्ऊद शरहुल वक़ाया जि. 1,स. 136 बाबुल अज़ान में तहरीर फ़रमाते हैं : इमाम व मुक़्तदी खड़े हों हय्या अलस्सलाह के वक़्त। इसी के हाशिया उम्दतुल रिआया में है : इमाम और क़ौम अपनी जगह से सफ़ में शामिल होने के लिये खड़े हों और इसमें इशारा है इस बात की तरफ़ कि जब कोई मस्जिद में दाख़िल हो तो उसके लिये नमाज़ का इन्तिज़ार करना खड़े होकर मकरूह है बल्कि बैठ जाएं किसी जगह में। फिर हय्या अलल फ़लाह पर खड़ा हो यही जामेउल मुज़मरात में है।

(10) और क़ाज़ी मुहम्मद सनाउल्लाह पानी पति क़ुद्देसा सिर्रुहु मुतवफ़्फ़ा सन् 1225 हि. अपनी किताब माला बुद्दा मिन्ह के सफ़ा 31 पर रक़म तराज़ हैं : नमाज़ पढ़ने का मस्नून तरीक़ा यह है कि अज़ान व इक़ामत कही जाए और हय्या अलस्सलाह के वक़्त खड़ा हो और इसके हाशिया में है मुक़्तदियों को भी उसी वक़्त खड़ा होना चाहिये।

अब तक आप अज़ीमुल मरतबत रफ़ीउद्दरजत उलमाए किराम फ़ुक़हा–ए–इज़ाम की फ़िक़ही इबारतों से क़ल्ब (दिल) व जिगर को मुनव्वर व मुजल्ला (रोशन) कर रहे थे, अब चलिये अहादीसे करीमा की ज़ियारत से नूरो सुरूर (रोशनी और ख़ुशी) हासिल करके आँखें ठन्डी करें।

अहादीसे करीमा

(11) इमाम बुख़ारी हज़रत अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस मुतवफ़्फ़ा सन् 256 हि. बुख़ारी शरीफ़ जि. 1,स. 88 में हज़रत सय्यिदुना अबू क़तादह रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत करते हैं कि नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब नमाज़ की इक़ामत कही जाए तो खड़े न हो ता वक़्ते की (जब तक) मुझे देख न लो।

(12) और हज़रत अल्लामा बदरुद्दीन महमूद ऐनी शारेह बुख़ारी मुतवफ़्फ़ा सन् 855 हि. इसी हदीस शरीफ़ के तहत उम्दतल क़ारी शरह सहीहुल बुख़ारी जि.5 स. 154 पर इमामे आज़म व इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहे तआला अलैहिमा का

क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि इमामे आज़म अबू हनीफ़ा और उनके शागिर्दे रशीद हज़रत इमाम मुहम्मद ने फ़रमाया कि जब मुअज़्ज़िन हय्या अलस्सलाह कहे तो सारे नमाज़ी सफ़ में खड़े हो जाए।

(13) और मुस्लिम शरीफ़ जि.1, स.220 में इमाम मुस्लिम अबुल हुसैन मुस्लिम इब्ने हज्जाज क़ोशेरी मुतवफ़्फ़ी सन् 261 हि. में कि नबी करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाए तो खड़े न हो, ता वक़्ते कि मुझे देख न लो।

(14) इसी हदीस शरीफ़ की शरह फ़रमाते हुए शारेह मुस्लिम शरीफ़ हज़रत अल्लामा शैख़ अबू ज़करिया मोहयुद्दीन यहया इब्ने शरफ़ नववी शाफ़ई मुतवफ़्फ़ा सन् 676 हिजरी अपनी शरह नववी में फ़रमाते हैं उलमाए सलफ़ व ख़लफ़ का इख़्तिलाफ़ रहा कि नमाज़ के वास्ते लोग कब खड़े हों और इमाम कब तकबीर (तहरीमा) कहे तो इमाम शाफ़ेई रहमतुल्लाहे तआला अलैहे और एक गिरोह का मस्लक है कि मुस्तहब यह है कि कोई भी खड़ा न हो जब तक कि मोअज़्ज़िन इक़ामत से फ़ारिग़ न हो ले और हज़रत क़ाज़ी अयाज़ हज़रत मालिक और आम उलमा (मालिकी) से नक़्ल फ़रमाया है कि खड़ा होना मुस्तहब उस वक़्त है जिस वक़्त मोअज़्ज़िन इक़ामत शुरू करे और हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो (सहाबिये रसूल) खड़े होते थे जब मोअज़्ज़िन क़दक़ा मतिस्सलात कहता और यही हज़रत इमाम अहमद अलैहिर्रहमह ने फ़रमाया है और इमामे आज़म अबू हनीफ़ा

रज़ियल्लाहो अन्हो और उलमाए कूफ़ा ने फ़रमाया कि जब मोअज़्ज़िन हय्या अलस्सलाह कहे उस वक़्त सफ़ में सब खड़े हो जाएं फिर जब क़दक़ा मतिस्सलाह कहे तो इमाम तकबीर कहे और जम्हूरे उलमा सलफ़ व ख़लफ़ ने कहा कि इमाम तकबीर (तहरीमा) न कहे ता वक़्ते कि मोअज़्ज़िन इक़ामत से फ़ारिग़ न हो ले।

(15) और तिर्मिज़ी शरीफ़, जि.1, स.76 में हज़रत अल्लामा अबू ईसा मोहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी मुतवफ़्फ़ा सन् 279 हि. हज़रत सय्यिदुना अबू क़तादा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाए तो खड़े न हो जब तक कि मुझे निकलता न देख लो।

इस हदीस शरीफ़ के तहत साहिबे तिर्मिज़ी हज़रत अबू ईसा ने फ़रमाया कि हज़रत अबू क़तादा की हदीस हसन है सही है और अहले इल्म सहाबा किराम की एक जमाअत उनके अलावा दीगर (दूसरे) हज़रात ने (इक़ामत के वक़्त) खड़े होकर इमाम के इंतिज़ार को मकरूह ख़याल फ़रमाया है और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि इमाम मस्जिद में हों और नमाज़ की इक़ामत कही तो सबके सब खड़े हों जिस वक़्त मोअज़्ज़िन क़दक़ा मतिस्सलांत, क़दक़ा मतिस्सलात कहे और यही इब्ने मुबारक का क़ौल है।

(16) और इसी के हाशिये में हज़रत अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिसे देहलवी ने अपनी किताब लम्आत शरीफ़ में इरशाद

फ़रमाया कि फुक़हाए किराम ने फ़रमाया है हय्या अलस्सलाह पर लोग खड़े हों।

(17,18,.19,20) अबू दाऊद शरीफ़, जि.1, स.96 में हदीस क़तादा अय्यूब और हज्जाज सवाफ़ से भी मरवी है और यही हदीस शरीफ़ सुनने निसाई, जि.1, स.111 में और मिश्कात शरीफ़, जि.1, स.64 में और सहीहुल बहारी, स.303 में मज़कूर है।

(21) इस हदीस (हज़रत अबू क़तादा वाली) की शरह में रासुल मुफ़स्सेरीन इमामुल मोहद्देसीन अल्लामा अली बिन सुल्तान मोहम्मद क़ारी रहेमहुल्लाहुल बारी अपनी किताब मिरक़ातुल मफ़ातीह शरह मिश्कातुल मसाबीह, जि.2, स.419 पर फ़रमाते हैं जब मोअज़्ज़िन इक़ामत कहे तो नमाज़ के लिये खड़ा न हो ता वक्ते कि (जब तक कि) मुझे मस्जिद में देख न लो इसलिये कि इमाम के आने से पहले खड़ा होना बे फ़ाएदा मशक़्क़त में पड़ना है। इसी तरह बाज़ लोगों ने कहा है उम्मीद कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम मोअज़्ज़िन के इक़ामत शुरू करने के बाद हुज्रे से तशरीफ़ ला रहे हों इसलिये हमारे इमामों ने फ़रमाया कि इमाम और क़ौम हय्य अलस्सलाह के वक़्त खड़े हों और क़दक़ा मतिस्सलाह के वक़्त शुरू कर दे और इब्ने हजर ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुक़ीम के इक़ामत से फ़राग़त के वक़्त निकलते थे तो उनको खड़े होने का उस वक़्त हुक्म फ़रमाया इसलिये कि यही उसकी ज़रूरत का वक़्त है इसलिये हमारे अस्हाब ने कहा सुन्नत यह है कि

मुक़्तदी खड़े न हों जब तक कि मुक़ीम जमीअ् (पूरी) इक़ामत से फ़राग़त हासिल न कर ले।

(22) मख़ज़ने बरकात, चश्मए करामात, बरकते मुस्तफ़ा आरिफ़ बिल्लाह कुदवतुल मोहद्देसीन अलम बरदारे दीन व हक़ अल्लामा शैख़ मोहक़्क़िक़ शाह इमाम अब्दुल हक़ मोहद्दिसे देहलवी मुतवफ़्फ़ा सन् 958 हि. रज़ियल्लाहो अन्हो अशअतुल लम्आत, जि.321 में फ़रमाते हैं। फुक़हाए किराम ने फ़रमाया है कि मज़हब यह है कि हय्या अलस्सलाह के वक़्त खड़ा होना चाहिये और हो सकता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उसी वक़्त में तशरीफ़ आवरी उसी वक़्त में तशरीफ़ लाना होता रहा हो

और स. 308 पर फ़रमाते हैं फ़क़ीह में मज़कूर है कि जिस वक़्त मोअज़्ज़िन हय्या अलस्सलाह कहे उस वक़्त खड़ा होना चाहिये। हो सकता कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ उसी वक़्त में होती रही हो।

(23) मोहर्रर मज़हब मोहज़्ज़ब हज़रत सैयदना इमाम मोहम्मद मुतवफ़्फ़ी सन् 189 हि. शागिर्द रशीद सैयदना इमामे आज़म अलैहिमर्रहमा मोअत्ता शरीफ़, स.88 सफ़ सीधी खड़े करने के बाब में मुफ़तहवी फ़तवा से आग ही बख़्शते हैं। इमाम मोहम्मद ने फ़रमाया कि जब मोअज़्ज़िन हय्या अलल फ़लाह कहे उस वक़्त लोगों को नमाज़ की तरफ़ खड़ा होना चाहिये फ़िर सफ़ ब सफ़ होकर सफ़ें सीधी करें और कंधों से कंधा मिला लें फिर जब मोअज़्ज़िन नमाज़ की इक़ामत कह चुके तो इमाम तकबीर कहे। यही कोल इमामुल अइम्मा सिराजुल अइम्मा कशफ़ुल गुम्मा

सैयदना इमामे आज़म अबू हनीफ़ा अलैहिर्रहमा मुतवफ़्फ़ी सन् 150 हि. का है।

(24) और इसी के हाशिये में है इमामे आज़म और आपके अस्हाब ने फ़रमाया कि मस्जिद के अन्दर नमाज़ियों के साथ इमाम मौजूद न हों तो न खड़े हों हत्ता कि इमाम को देख लें। अबू क़तादा रज़ियल्लाहो अन्हो की हदीस की वजह से जो रावी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम से कि जिस वक़्त इक़ामत कही जाए तो मुझे देख लेने तक खड़े न हों। यही क़ौल हज़रत इमाम शाफ़ेई और दाऊद का है और उनके साथ जब इमाम हाज़िर हों तो उस वक़्त खड़े हों । जिस वक़्त मोअज़्ज़िन हय्या अलल फ़लाह कहे।

इन अहादीसे करीमा और शुरूहे मुतबर्रका और जलीलुल क़द्र अज़ीमुश्शान शजर फ़ुक़हाए किराम और उलमाए इज़ाम की कुतुबे फ़क़ीह मोअतबेरा, मशहूरा और उनके मुस्तन्दा मुतदावला फ़तावा मुबारका से सलफ़ व ख़लफ़ का मस्लक व मज़हब आफ़ताब नीमरोज़ की तरह ख़ूब रोशन व मुनव्वर और वाज़ेह हो गया कि वक़्ते इक़ामत इमाम और मुक़्तदी दोनों बैठे रहना चाहिये और हय्या अलस्सलाह पर (जैसा कि बाज़ न कहा है) या हय्या अलल फ़लाह (जैसा कि अकसर फ़ुक़हा ने कहा है) या क़दक़ा मतिस्सलाह पर (इमाम ज़ुफ़र के नज़दीक) खड़ा होना चाहिये और दलाइल पर नज़र करते हुए हय्या अलल फ़लाह पर ही खड़ा होना बहतर और राजेह तर है उस वक़्त खड़ा होना कोई नया मस्अला और बरैलवियों का गढ़ा हुआ नहीं है बल्कि ख़ैरुल

कुरून अहदे (ज़माना) रिसालत मआब सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम और अस्रे सहाबएं किराम व ताबेईने इज़ाम और ज़मानए अइम्मए मुज्तहेदीन और उलमाए मुतक़द्देमीन व मुतअख़्ख़ेरीन से अब तक जम्हूरे सहाबा व उलमा मोहद्देसीन व फ़ुक़हाए मुज्तहेदीन इमामुल अइम्मा, सिराजुल अइम्मा, कशफ़ुल ग़ुम्मा इमामे आज़म अबू हनीफ़ा और उनके शागिर्दे रशीद हज़रत इमाम मोहम्मद व क़ाज़ियुल क़ुज़ात हज़रत इमाम यूसुफ़ और हज़रत इमाम ज़ुफ़र वग़ैरह अल्लामा शरं बिलाली, अल्लामा तहतावी, अल्लामा शामी, अल्लामा हस्कफ़ी, शैख़ुल इस्लाम तमरताशी, मलकुल उलमा कासानी, हज़रत अबुल बरकात नस्फ़ी, सदरुश्शरीआ हज़रत उबैदुल्लाह हन्फ़ी और मोअल्लेफ़ीन फ़तावा आलमगीरी, हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी के वालिदे माजिद हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम मोहद्दिसे देहलवी, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अबुल बरकात देहलवी और शागिर्दे रशीद हज़रत मुल्ला जीवन शैख़ अहमद गोयामवी, क़ाज़ी इस्मतुल्लाह लखनवी, शैख़ निज़ामुद्दीन भागलपुरी वग़ैरहुम का मामूल रहा है और है। (इन मुअज़्ज़ज़ उलमा का इस पर अमल रहा है)

हाँ यक़ीनियात की मंज़िलें कुछ और तय करें । फ़तावा हिन्दिया मारूफ़ फ़तावा आलमगीरिया की तालीफ़ व तर्तीब और इसकी तारीख़ से अंदाज़ा लगाएं कि इस मस्अले में उलमाए हिन्द का क्या मौक़फ़ (नज़रिया) रहा है। सुल्तानुल हिन्द हज़रत औरंगज़ेब मोहम्मद आलमगीर अलैहिर्रहमह के दौरे सलतनत में उन्हीं की

पेशकश पर हिन्दुस्तान भर के नामवर उलमा और मशहूर फ़ुक़हा, बड़े बड़े मशाइख़े किराम उनके महल सिरा में जमा हुए और इस जमाअते जलीला ने उमदतुल उलमा कुदवतुल फ़ुज़ला, रईसुल फ़ुक़हा हज़रत शैख़ निज़ामुद्दीन बुरहानपुरी की सरबराही व सरपरस्ती में बड़ी काविश व मेहनत के साथ बेशुमार कुतुब मोअतमदा और फ़तावा-ए-मोअ्तबरा और अक़वाले मुफ़्ता बहा से फ़िक़्ही जवाहर पारे और इल्मी ज़ख़ीरे पूरे एहतियात के साथ छान फटक कर जमा किये ताकि आलमे इस्लाम इसके मुताबिक़ अमल पैरा हो और ब वक़्ते इख़्तिलाफ़ उसकी तरफ़ रुजूअ करे।

इस फ़तावा की तदवीन का आग़ाज़ (शुरूआत) 1077 हि. में हुआ और तकमील 1085 हि. में हुई। बफ़ज़्लेही तआला पूरी दुनिया में इसे कुबूलियते आम्मा का दर्जा हासिल है।

शुरू फ़तावा में इसी का हवाला पैश किया है ताकि यक़ीन हो जाए कि हज़रत औरंगज़ेब के ज़माने में भी सारे उलमाए हिन्द का इसी पर फ़तवा था कि ब वक़्ते इक़ामत बैठे रहें और **हय्या अलल फ़लाह** पर खड़े हों।

इसी मस्अले की ताईद व बयान उलमाए बरैली कर रहे हैं। आला हज़रत अज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमह वफ़ात सन् 1340 हि. फ़तावा रज़विया, जि.2, स.304 में फ़रमाते हैं : मुक़्तदियों को हुक्म है कि तकबीर बैठकर सुनें।

हय्या अलल फ़लाह पर खड़े हों और खड़े खड़े तकबीर सुनना मकरूह (नापसंदीदा) है अगर कोई शख़्स ऐसे वक़्त मस्जिद में आए कि तकबीर हो रही हो फ़ौरन बैठ जाए और हय्या अलल

फ़लाह पर खड़ा हो।

और इसमें हय्या अलल फ़लाह पर खड़ा होने में राज मुकब्बिर (इक़ामत कहने वाले) के इस क़ौल की मुताबेक़त है कि क़दक़ा मतिस्सलाह इधर उसने हय्या अलल फ़लाह कहा। आओ मुराद पाने को जमाअत खड़ी हुई उसने कहा क़दक़ा मतिस्सलाह जमाअत क़ायम हो गई।

और इसी फ़तावा के स. 338 पर फ़रमाते हैं ज़ब मुकब्बिर हय्या अलल फलाह पर पहुँचे उस वक़्त खड़े हों कि उस क़ौल की मुताबेक़त हो जो उसके बाद कहेगा कि क़दक़ा मतिस्सलाह जमाअत खड़ी हुई यहाँ तक तकबीर हो रही और इस वक़्त कोई शख़्स बाहर से आया तो यह ख़याल न करे कि चन्द कलेमात रह गए हैं फिर खड़ा होना होगा फ़ौरन बैठ जाए और हय्या अलल फ़लाह पर खड़ा हो (मुलख़सन)

(26) और फ़्यूज़ुल बारी शरह सहीहुल बुख़ारी, स.295 पर अल्लामा सैयद महमूद अहमद रज़वी पाकिस्तानी फ़रमाते हैं। कुतुबे अहनाफ़ (हन्फ़ियों की किताबों) में है कि इक़ामत के वक़्त जो शख़्स आए और जो लोग मस्जिद में मौजूद हों, उन्हें चाहिये कि बैठे रहें, उस वक़्त उठें जब मुकब्बिर हय्या अलस्सलाह पर पहुँचे (मुलख़सन)

नोट : नाज़ेरीन इसको देखकर कि किसी किताब में हय्या अलस्सलाह और किसी में हय्या अलल फ़लाह पर खड़ा होना लिखा, कशमकश में न पड़ें कि किस पर अमल हो? इसकी सूरत यूँ करें कि हय्या अलस्सलाह पर खड़े होने की तैयारी करें

और हय्या अलल फ़लाह पर सीधा खड़ा हो जाएं ताकि दोनों पर जहाँ तक हो सके अमल हो जाए।

(27) और मिरआत शरह मिश्कात, स.404 पर मौलाना मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ साहब नईमी, अशरफ़ी, बदायूनी सुम्मा पाकिस्तानी (फ़रमाने रसूल अलैहिस्सला खड़े न हो जब तक कि मुझे देख न लो) के तहत शरह में फ़रमाते हैं उस ज़माने में तरीक़ा यह था कि सहाबा किराम सफ़ बनाकर बैठ जाते। हुज़ूर अपने हुजरे में रौनक़ अफ़रोज़ होते, मुकब्बिर खड़े होकर तकबीर शुरू करता, जब हय्या अलल फ़लाह पर पहुँचता तो सरकार हुजरे से बाहर तशरीफ़ लाते तो सहाबा किराम को नज़र आते।

फ़ुक़हा फ़रमाते हैं कि नमाज़ी सफ़ में हय्या अलल फ़लाह पर खड़े हों। उनका माख़ज़ (दलील) यह हदीस है। नीज़ वह हदीस जो मिश्कात शरीफ़ में ब रिवायत मुस्लिम; बुख़ारी दो तीन सफ़ा बाद बाबुल मसाजिद से कुछ पहले आ रही है।

यह रहा उलमाए अहनाफ़ व फ़ुक़हाए इंसाफ़ का मस्लक व मज़हब, मुख़ालेफ़ीन व मुआनेदीन और उनके उलमा को मौलाना सनाउल्लाह पानीपती पर बड़ा भरोसा व एतिमाद है। उनक क़ौल भी उन की किताब माला बुद्दा मिन्ह से नक़्ल कर दिया गया है कि वक़्ते इक़ामत बैठे रहने को नमाज़ का मस्नून तरीक़ा बताया है।

(28) अब मानेईन (फ़िरक़ए वहाबिया, देवबन्दिया) के मायए नाज़ दारुल उलूम देवबंद के क़ाबिले फ़ख़्र मुदर्रिस, ...नूरुल ईज़ाह के मुहश्शी मौलवी एजाज़ अली देवबंदी ने देखिये इस मस्अले के बारे में हाशिया नूरुल ईज़ाह पर किया वज़ाहत की है

मुलाहज़ा हो। और अदब यह है कि खड़ी हो क़ौम और इमाम भी अगर हों वह मेहराब के क़रीब मुक़ीम के क़ौल हय्या अलल फ़लाह के वक़्त, इसलिये कि मुक़ीम ने अपने इस क़ौल के ज़िम्न में क़याम (खड़े होने) का हुक्म दिया है तो इसका जवाब (उसी वक़्त) खड़े होकर देना चाहिये।

देखा आपने ! हक़ वह जो सर चढ़के बोले और सरकार ने फ़रमाया भी है (हक़ वह है जो ग़ालिब रहे मग़लूब न हो) मुख़ालेफ़ीन (देवबंदी, वहाबी हज़रात) के मश्हूर व मारूफ़ मुफ़्ती भी हक़ बोले न रह सके। अब तो यक़ीन हो गया होगा कि हक़ किया है ?

और उलमाए सलफ़ व ख़लफ़ (पहले और बाद के उलमा) की पैरवी खड़े होने में है या बैठने में ? तो जो मस्अला दौरे रिसालत मआब से अब तक के उलमा, सुलहा, फ़ुक़हा, मशाइख़ और इनके मुत्तबेईन (मानने वालों) का मामूल और मुफ़्ता बेहा (जिस पर उनका अमल और फ़तवा) हो, इसे नया मस्अला कहना और गढ़ा हुआ बताना कितना बड़ा ज़ुल्म और मस्अलए हक के साथ किस क़दर शरारत और हट धर्मी है। इसी को कहते हैं चौराहे पर सरे बाज़ार दिन के उजाले में दीन व दयानत का गला घोंटना, या ठीक दोपहर को आँखें मूंद आफ़ताबे जहाँ ताब से फ़ैज़ (रोशनी) न लेकर कवर चश्मी (अंधा पन) का सुबूत देना।

फ़िक़ही किताबों के मुसन्नेफ़ीन और कुतुबे अहादीसे नबविया के मुरत्तेबीन के मुबारक नामों के साथ उनका सने विसाल (तारीख़े वफ़ात) इस लिये तहरीर कर दिया गया है ताकि यक़ीन और.

दिल व दिमाग़ में ख़ूब पुख़्ता हो जाए कि यह मस्अला दलील से साबित शुदा और पुराना है और सलफ़ की रौशन सुन्नत और पसन्दीदा तरीक़ा है, कोई नया और गढ़ा हुआ नहीं है। फिर ऐसे क़दीम मस्अले को जिस पर उलमा और फ़ुक़हा का अमल हो नया और गढ़ा हुआ ख़याल करना जिहालत व ना समझी के सिवा कुछ नहीं, या जान बूझकर हक़ व सदाक़त से इनादन (अदावत में) ऐराज़ करना है और यह कहना कि फ़ला जगह या यहाँ और वहाँ ब वक़्ते इक़ामत लोग बैठे नहीं खड़े रहते हैं, यह कोई दलील नहीं है। दलीलें तो मज़कूर हुईं। इन्साफ़ पसन्द हक़ की तलाश करने वाले के लिये जो तहरीर में आया काफ़ी शाफ़ी (यक़ीनी) वाफ़ी साफ़ी है। ब वजूद इन दलाइल व बराहीन के जो शख़्श ऐराज़ व इनकार करे उसका कोई इलाज नहीं ऐसों ही के हक़ में कुरआने करीम ने फ़रमाया है :

तर्जमा : और जिसे अल्लाह नूर न दे उसके लिये कोई नूर नहीं। **(कन्ज़ुल ईमान)**

वल्लाहो अअ़लम बिस्सिवाब व इलैहिल मरजओ वल मआब

जैश मोहम्मद सिद्दीक़ी क़ादरी बरकाती

इत्तिला

मुस्लेहे क़ौमो मिल्लत, कुतबे नेपाल, आफ़ताबे बुर्जे कमाल, नाशिरे मस्लके आला हज़रत, पास्बाने दीने हनफ़ियत हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद जैश सिद्दीक़ी ख़लीफ़ा हुज़ूर अहसनुल उलमा मुस्तफ़ा हैदर हसन मियाँ अलैहिर्रहमा की तहरीरों को जमा करके किताबी शक्ल में शाए करने की सआदतमंदी हज़रत के तिलमिज़े अरशद हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अब्दुस्सलाम साहब क़िब्ला अमजदी, उस्ताज़ जामिआ ग़ौसिया [illegible] नवाज़ खजराना (इन्दौर) के हिस्सा में आई जिस[illegible]हिश और आरज़ू एक मुद्दत से मेरे दिल में अंगड़ाइयाँ [illegible] थीं और अलहम्दु लिल्लाह दो किताबें हुज़ूर शेरे नेपाल साहब क़िब्ला की दो माह के अर्से में मन्ज़रे आम पर आ भी गईं और इन्शाअल्लाहो तआला बहुत जल्द तीसरी तस्नीफ़ बनाम "इस्लाहे अक़ाइदो आमाल" अमजदी साहब क़िब्ला की कोशिश और तलख़ीस व इज़ाफ़े के साथ मन्ज़रे आम पर आने वाली है।

मैं अमजदी साहब को सद आफ़रीं देता हूँ और इनकी इस कोशिश पर आपको मुबारकबाद देता हूँ कि आप अकाबिर की तहरीर जमा करके नज़्रे क़ारेईन करने में सरगर्म हैं। अल्लाह आपको कामयाबी अता फ़रमाए। आमीन।

फ़क़ीर मेकश रज़ा
मोहम्मद अलाउद्दीन बरकाती मिस्बाही
बहू अरवा (नेपाल)

रज़वी कम्प्यूटर, इन्दौर-9827014799